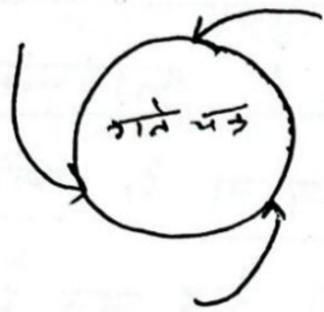
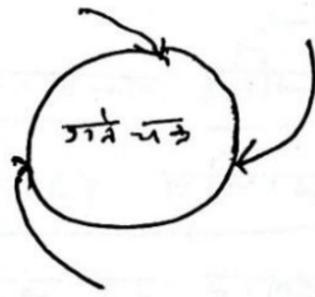


चक्रवात के उत्पत्ति के लिए वायु परिसंचन
 किन्ही निम्न भाग केन्द्र के चारों ओर फेरल निम्न के अडकप
 होने से अनिवार्य है, इसी गोलार्ध में यह परिसंचरण यही
 से शुरू की इसी दिशा में और दक्षिणी गोलार्ध में यही
 से शुरू की दिशा में होगी है,

इसके
 कारण
 दोनों
 गिनी बोन



उत्तरी गोलार्ध



दक्षिणी गोलार्ध

चक्रवात की आँक (आकार)
 के चारों ओर चलने वाली वायु
 से होती है।
 8-10° अक्षांशों के बीच
 अणुवाद-दाबों का

इसके उत्पत्ति का उष्ण चक्रवात की आँक
 के चारों ओर चलने वाली वायु से होती है, इसमें
सामान्यतः 8-20° अक्षांश के बीच होती है,
अणुवाद दाबों, इसकी उत्पत्ति 20° म के ऊपर होती है।

शीतोष्ण चक्रवात में दो विपरीत दिशाओं
 के दो विपरीत दिशाओं वाली वायुएक आकर एक
 दूसरे से मिलती है, उष्ण चक्रवात में भी ऐसा ही होता है,
 लेकिन वायु प्रवाह अधिक होने के कारण दोनों ही वायु
 रेखा के गर्म होकर प्रारंभिक रूपों में वायुएक बिना किन्ही
 संरचना के उभर उठती है, शीतोष्ण वायु में किन्ही गर्म वायु
 उभर उठता है, और ठंडी वायु नीचे रहता है, लेकिन
 उष्ण चक्रवात में दोनों ही वायु गर्म ही जाते हैं, अतः
 आकार के बाद जुड़ने के पूर्व ही उभर उठ जाते हैं।
 और आकार के बाहरी क्षेत्र में बर्षा कटती है, इस
 चक्रवातीय बर्षा का कारण आकार होता है।

उष्ण चक्रवात में
 दोनों ही ओर के
 आकार वाली वायुएक
 गर्म होती है आकार
 आकार के बाद जुड़ने
 के पूर्व ही उभर उठता
 है, और आकार के बाहरी
 क्षेत्र में बर्षा कटती है
 चक्रवातीय बर्षा का
 कारण आकार होता है।

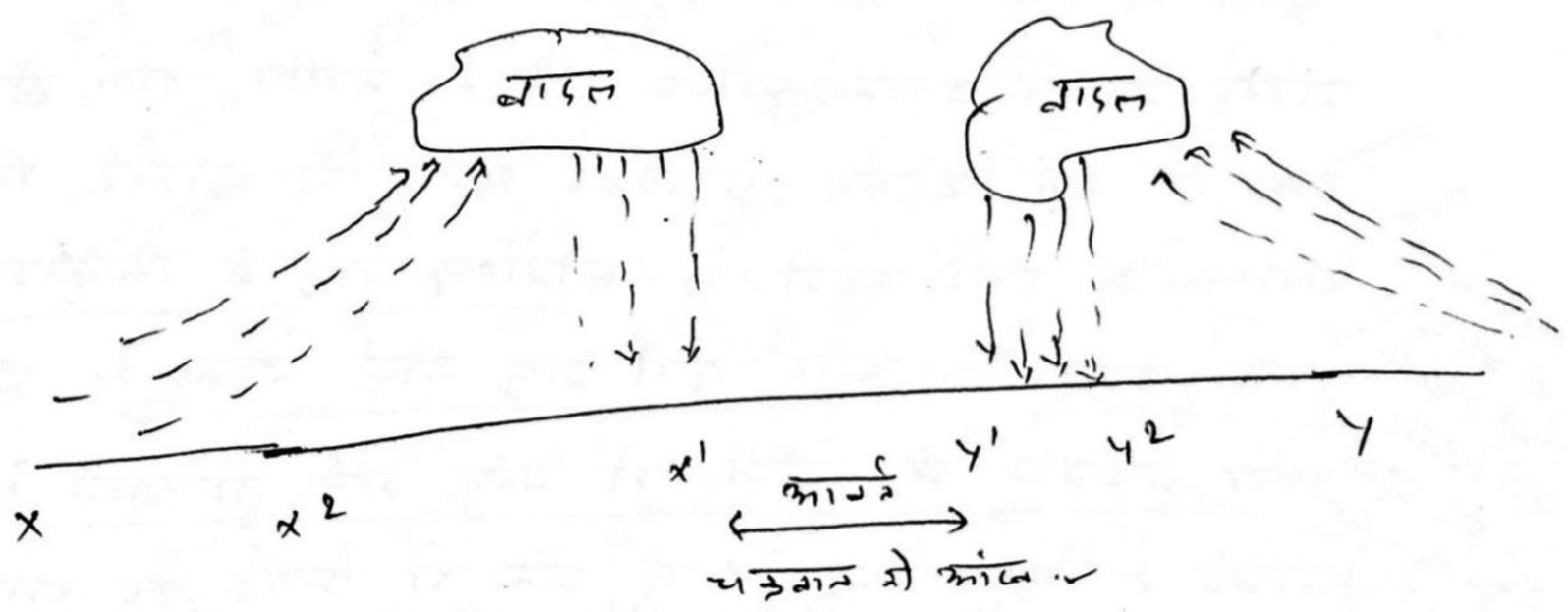
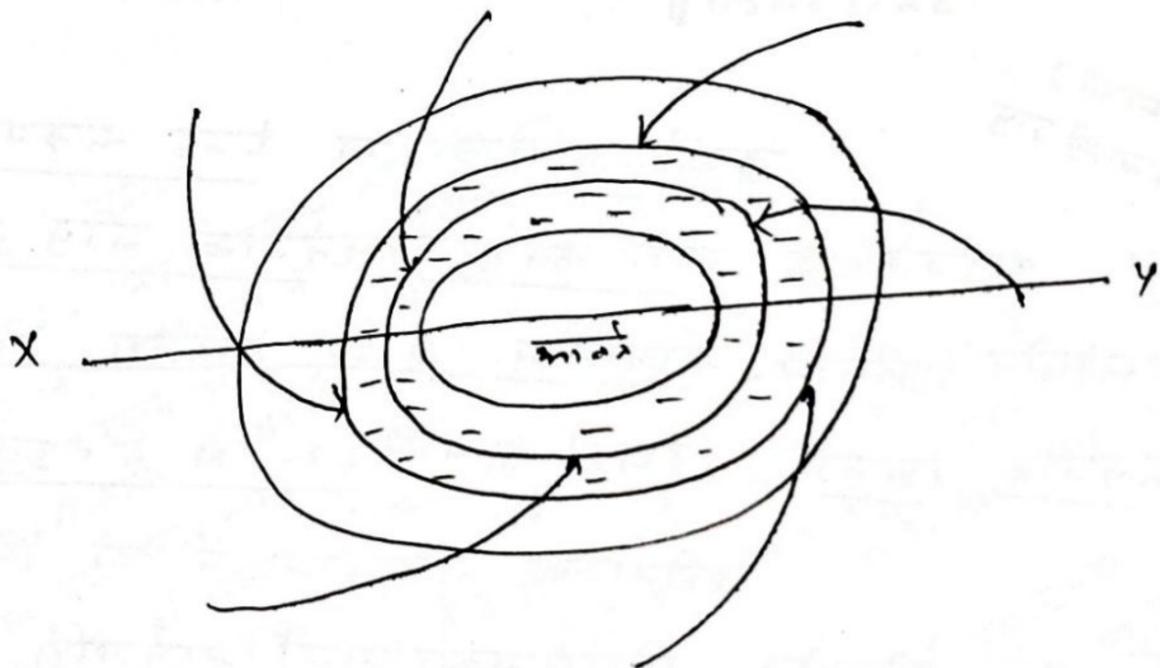
उष्ण चक्रवात में सामान्यतः दीपावत

बड़ी बनना क्योंकि दोनों तरफ से आनेवाली बाधों में बाधाएं कम रहती हैं, और यदि बनना भी है तो क्षीणकारी कला रहित है, दोनों तरफ से बाधों को हटाने का एक चक्रवातीय प्रभाव लेंड ड्रा प्रतीक

निश्चित ही जाते हैं, सर्वाधिक तापमान वाले क्षेत्र पर निम्नभार केन्द्र बनता है और निम्नभार केन्द्र के

उपरी इत्यदि तापीय विषुवतीय रेखा के ऊपर बलिक स्पल्लिंग को समुद्र के कनिथमिन्स के क्षेत्र तापीय विषुवतीय रेखा के नीचे जाते हैं, जो कि तापीय प्रभाव के निम्नभार के क्षेत्र बन जाते हैं।

यहाँ और चलनेवाली बाधों को चक्रवात इत्यदि कला कला है, इसकी इत्यदि तापीय विषुवतीय रेखा के ऊपर नदी बलिक स्पल्लिंग और समुद्र के कनिथमिन्स के तापीय विषुवतीय रेखा के नीचे जाते हैं, और अधिक तापीय प्रभाव का क्षेत्र निम्नभार का क्षेत्र बन जाता है।



$X' - Y'$ → आवर्त / चक्रवात की आंख
 $X - Y$ → चक्रवात का व्यास

$x^2 - x'$
 $y^2 - y'$

चक्रवातीय वायु प्रवाह क्षेत्र एवं वर्षा का क्षेत्र.

$x - x^2$
 $y - y^2$

गर्म वायु की ऊपर उठने की प्रवृत्ति.

चक्रवात के आंशिक चरण में बहुत दक्षिण

उत्तरी हवा का आंशिक दबाव के कारण पुनः

गर्म क्षेत्र ऊपर उठने की प्रवृत्ति विकसित करना

यह प्रक्रिया निम्न क्षेत्र में राष्ट्रीय विस्तार की

स्थिति उत्पन्न करता है

विस्तार

उत्तम चक्रवात के धारित व्यास (50-100 km) और
 कक्षीयता न होने के दो प्रमुख कारण हैं -

1) स्वतंत्र और समुद्री भाग का विस्तार इस प्रकार
 है कि वे आलग-2 वायुमण्डल का विस्तार प्रकृति
अक्षांशीय प्रदेश में करते हैं, जैसे बंगाल की खाड़ी
आरब सागर, फारस की खाड़ी, मार्स के उत्तरी
मैदान में समी गर्म वायु रहती है, जिससे स्वतंत्र
समकालीन के आकार में दीर्घाकार के बल के कई
विस्तार के विकसित होते हैं।

2) दूसरा कारण यह है कि उत्तम चक्रवात क्षेत्र में
राष्ट्रीय प्रभाव अधिक होते हैं कारण विस्तार के
द्वारा आलग-2 क्षेत्रों में विकसित होते लगते हैं,
 इन कारणों के परिणामस्वरूप उत्तम चक्रवात का
मुख्य भाग और प्रभाव क्षेत्र इस प्रकार है - दक्षिण
राजस्थान, रोहतास